हिंदी पत्रकारिता

के इतिहास के मूल्यांकन की समस्याएँ

जगदीश्वर चतुर्वेदी

हिंदी पत्रकारिता

के इतिहास के मूल्यांकन की समस्याएँ

जगदीश्वर चतुर्वेदी

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: सितंबर, 2024

© जगदीश्वर चतुर्वेदी

अनुक्रम

भूमिका 6

पहला खंड

लोकतंत्र, मीडिया और जनप्रिय संस्कृति

मीडिया : लोकतंत्र का 'चौथा स्तंभ' 8

इजारेदार मीडिया और लोकतंत्र 32

प्रेस का निजी स्वरूप 59

लोकप्रिय पत्रकारिता 71

विखंडन का आनंद 82

प्रेस और कामुकता 87

दूसरा खण्ड

हिंदी पत्रकारिता का इतिहास : परिप्रेक्ष्य और दृष्टि

हिंदी पत्रकारिता के प्रस्थान बिंदु 98

इतिहास लेखन की परंपरा और पद्धति 112

राज्य का चौथा खंभा और इतिहास-दृष्टि 118

इतिहास की जटिलताएँ 123

राधाकृष्ण दास की इतिहास-दृष्टि 143

बालमुकुंद गुप्त की इतिहास - दृष्टि 149

लोकसंस्कृति, लोकप्रिय संस्कृति और पाठक वर्ग की प्रकृति 157

ब्रिटिश और भारतीय प्रेस-परंपरा 165

काल - निर्धारण का आधार 171

मार्कसीय नज़रिया 175

उपकरणवादी दृष्टिकोण 177

संरचनावादी दृष्टिकोण 181

प्रेस और रूढ़ि 188

'संकट' की अवधारणा और प्रेस 192

तीसरा खंड

हिंदी पत्रकारिता का विकास: विचारधारा और कानून

प्रेस का उदय 196

सेंसरशिप से पहले और बाद की पत्रकारिता 200

राजा राममोहन राय और सांस्कृतिक अस्मिता का संघर्ष 204

नवजागरणकालीन प्रेस चेतना 208

भारतेंदुयुगीन पत्रकारिता का परिप्रेक्ष्य 212

स्वतंत्रता पूर्व की पत्रकारिता में विचारधारात्मक संघर्ष 223

प्रेस और हिंदी साहित्य 262

आधुनिक हिंदी गद्य की भाषा का विकास 276

मध्यवर्ग और माध्यम तकनीक 296

विचारधारा के युग में प्रेस 303

जनमाध्यम एवं पूँजीपति वर्ग 332

औपनिवेशिक पत्रकारिता 349

आजादी के बाद की हिंदी पत्रकारिता 359

भारत में प्रेस कानून 420

चौथा खंड

समाचार की निर्माण-प्रक्रिया और प्रेस की भूमिका

प्रेस-व्यापार का कथ्य 434

अखबार का ऊपरी सौंदर्य 438

खबर चयन के मानदंड 441

प्रेस की भूमिका 447

समाचार मूल्य की संरचनावादी दृष्टि 460

संपादकीय का सामाजिक प्रभाव 464

रिपोर्टिंग के विभिन्न क्षेत्र 470

आतंकवाद और प्रेस 494

पर्यावरण और प्रेस 521

पाँचवाँ खंड

आधुनिक संचार माध्यम: संकट और चुनौतियां

संचार माध्यम और साहित्य 530

साहित्यिक पत्रकारिता का संकट 539

डिजिटल पत्रकारिता की चुनौतियाँ 544

डिजिटल युग की लघु पत्रिका 548

परिवर्तनकामी पत्रकारिता 555

छठा खंड

युद्ध, आतंकवाद और मीडिया

धार्मिक आतंकवाद का चरित्र 562

आतंकवाद और नॉम चोमस्की 576

युद्ध और जनमाध्यम 599

माध्यमों में आतंकवाद 636

आतंकवाद और टेलीविजन 643

भूमिका

प्रस्तुत पुस्तक में हिंदी पत्रकारिता के मुख्य प्रश्नों का मीडिया सिद्धांतों की रोशनी में विस्तार से विश्लेषण किया गया है। ख़ासतौर पर मासकल्चर और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के परिप्रेक्ष्य में हिंदी पत्रकारिता के सवालों पर विस्तार से विचार किया है। यह पुस्तक हिन्दी में प्रचलित पत्रकारिता की पुस्तकों से बुनियादी तौर पर भिन्न परिप्रेक्ष्य में लिखी गई है। आरम्भ में मैंने जब पत्रकारिता को सन् 1990 में कलकत्ता विश्वविद्यालय में हिंदी एम.ए. के छात्रों को पढ़ाना आरम्भ किया तो उस समय पढ़ाते हुए जो नोट्स तैयार किए थे, उनको सबसे पहले हिंदी पत्रकारिता के इतिहास लेखन की भूमिका नामक पुस्तक में लिपिबद्ध किया। उसके बाद अनेक परिवर्तन घटित हुए जिनमें से कुछ महत्वपूर्ण परिवर्तनों को शामिल करके यह पुस्तक नई सामग्री के साथ आपके सामने प्रस्तुत है। आशा है मीडिया अध्येताओं और विद्यार्थियों को इस पुस्तक के माध्यम से हिंदी पत्रकारिता को नए वैज्ञानिक नजरिये से देखने में मदद मिलेगी।

जगदीश्वर चतुर्वेदी

पूर्व अध्यक्ष, हिंदी विभाग और

प्रोफ़ेसर, कलकत्ता विश्वविद्यालय

कलकत्ता

पहला खंड

लोकतंत्र, मीडिया और जनप्रिय संस्कृति

मीडिया : लोकतंत्र का 'चौथा स्तंभ'

'जो व्यक्ति कुछ भी नहीं पढ़ता, वह बेहतर शिक्षित होता है उन लोगों से जो सिर्फ़ अख़बार पढ़ते हैं।'

- थामस जाफ़रसन

लोकतंत्र और प्रेस का संबंध जटिल और संश्लिष्ट है । यह जनप्रिय धारणा है कि लोकतंत्र की उपस्थिति के लिए स्वतंत्र प्रेस का होना बेहद ज़रूरी है । स्वतंत्र प्रेस के बिना लोकतंत्र विकसित नहीं होता। यही वजह है प्रेस लोकतंत्र का चौथा स्तंभ है । प्रेस लोकतंत्र का चौथा स्तंभ तब ही हो सकता है जब उसकी भूमिका का परिप्रेक्ष्य एवं आधार मानवाधिकार को बनाया जाए। महज लोकतंत्र के परिप्रेक्ष्य में प्रेस की चौथे स्तंभ के रूप में सही समझ नहीं बनती। सवाल यह है 'लोकतंत्र के चौथे स्तंभ' से क्या तात्पर्य है? इस अवधारणा का उदय किस परिप्रेक्ष्य में हुआ और आज किस तरह का परिप्रेक्ष्य है?

लोकतंत्र का चौथा स्तंभ - चौथे स्तंभ के तौर पर मीडिया को उपग्रहयुग के परिप्रेक्ष्य में नए सिरे से परिभाषित करने की ज़रूरत है। ख़ासकर प्रेस की भूमिका को इंटरनेट और कंप्यूटर तकनीक के परिप्रेक्ष्य में पुनर्परिभाषित किया जाना चाहिए। कैथरीन फ़ॉल्टन (ग्लोबल बिज़नेस नेटवर्क) ने कहा - ''आज के दौर में हमें परंपरागत